Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

महाकवि बाणभट्ट का परिचय

दीनानाथ मिश्र
शोधछात्र - स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
जिला – दरभंगा (बिहार), भारत

सारांश – गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट का वही स्थान है जो पद्यकाव्य में कालिदास का है। बाणभट्ट सम्राट हर्षवर्धन के सभापण्डित थे। इनका काल सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध है। आख्यायिका हर्षचरितम् में इन्होंने अपना परिचय विस्तार से दिया है। कथाग्रन्थ कादम्बरी इनकी विख्यात रचना है। इनका गद्य पर असाधारण अधिकार था। इनके सम्बन्ध में – **वश्यवाणी कविचक्रवर्ती, बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्, वाणी बाणो बभूव** इत्यादि आभाणक प्रसिद्ध है।

प्रमुख शब्द – गद्यकाव्य, बाणभट्ट, कादम्बरी, हर्षचरितम्, हर्षवर्धन, ह्वेन सांग, मयूरभट्ट।

संस्कृत साहित्य के अधिकतर लेखकों–विशेषत: कवियों और नाटककारों के व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान शून्य के बराबर ही है। हम उनका नाम ही नाम जानते हैं। उससे अधिक कुछ नहीं जानते। हमें न उनके कुल का पता है न काल का और न घर का। केवल कुछ अभिलेखों, बाह्य साक्ष्यों एवं प्रचलित दन्त कथाओं से ही कुछ ज्ञान होता है या फिर कल्पना का ही आँचल हमें पकड़ना पड़ता है। कवि सम्राट् कालिदास को ही ले लीजिए। उनके व्यक्तिगत जीवन को हम अब भी अन्धकार में टटोलते जा रहे हैं। वे इतने निरभिमानी और संकोची स्वभाव के थे कि आत्म–प्रख्यापना से दूर ही रहे। यही हाल अन्य काव्यकारों का भी समझिये। किन्तु सौभाग्यवश अपवाद स्वरूप इने–गिने कुछ ऐसे तथ्य छोड़ गए हैं, जिनसे उनका सही–सही ज्ञान हो जाता है। ऐसे कवियों में सब से प्रमुख आलोच्य कवि बाणभट्ट हैं। इन्होंने कादम्बरी के कुछ आरम्भिक श्लोकों में अपने वंशधरों का संक्षिप्त वर्णन दिया है, लेकिन हर्षचरित में तो न केवल अपने वंश की प्रत्युत् अपने जन्म स्थान, काल और व्यक्तिगत जीवन आदि का भी विस्तृत विवरण दे रखा है। शब्दान्तर में यों समझ लीजिए कि प्रथम, द्वितीय उच्छ्वास और तृतीय उच्छ्वास का भी कुछ भाग 'हर्षचरित' नहीं बल्कि बाणचरित है।

बाण ने वत्स को अपना वंश–प्रवर्तक मूलपुरुष माना है, जो सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। इन्हीं वत्स से वात्स्यायन गोत्र चला। कालक्रम से बहुत समय बाद इस वंश में कुबेर नामक एक ऐसे प्रकाण्ड विद्वान् ने जन्म लिया, जो वेदादि सभी शास्त्रों के पारंगत थे और जिनके चरणों में सभी गुप्तवंशीय राजागण शिर झुकाये रहते थे। कुबेर के पाशुपत, पाशुपत के अर्थपति, अर्थपति के चित्रभानु और चित्रभानु के बाण पुत्र हुए। तद्यथा–

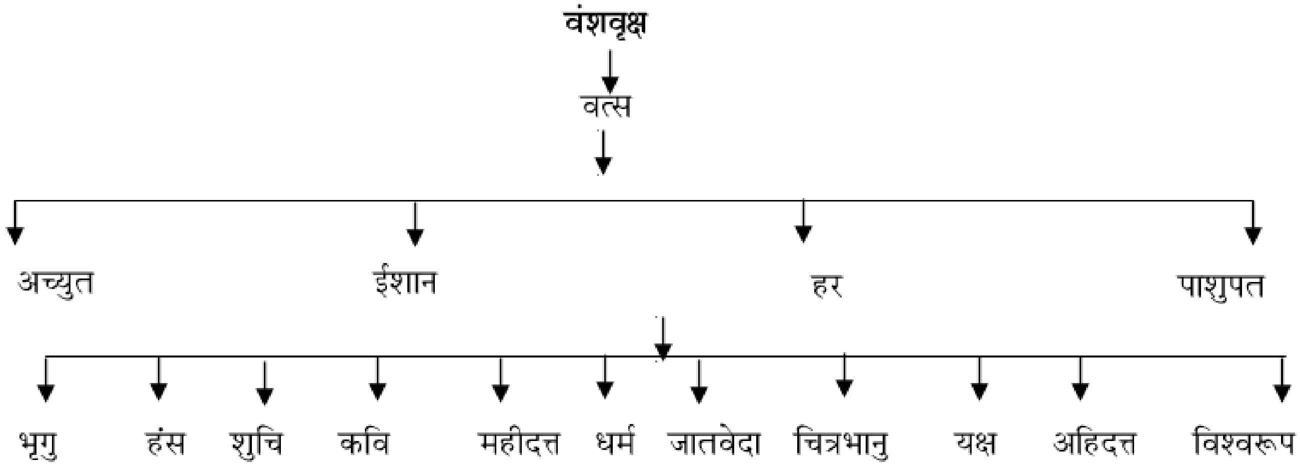

उक्त वंशवृक्ष के अनुसार पाशुपत बाण के प्रपितामह (पड़दादा) सिद्ध होते हैं, किन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि कादम्बरी के वंशपरक श्लोकों में पाशुपत का कहीं उल्लेख नहीं है। यह सम्भव नहीं कि बाण अपने प्रपितामह को एकदम भूल जाए। हो सकता है कि बाण ने कादम्बरी में भी पाशुपत सम्बन्धी कोई श्लोक लिख रखा हो और वह मूल लिपिकार की भूल से रह गया है और वह भूल बाद की प्रतियों में भी बराबर चलती आ रही हो अथवा यह भी हो सकता है कि बाण ने कादम्बरी में क्रम निरपेक्ष होकर विशिष्ट वंशधरों का उल्लेख करना ही उचित समझा हो, हर्षचरित की तरह सभी वंशधरों का क्रम सापेक्ष उल्लेख न किया हो।

हर्षचरित के प्रथम, द्वितीय और तृतीय उच्छ्वास के कुछ भाग में बाण की अपनी रामकहानी है। उसमें उन्होंने अपने कुल-प्रवर्तक वत्स के रहने के लिए उनके चचेरे भाई सारस्वत ने हिरणबाह (जिसे शोण भी कहते हैं) के तीर पर प्रीतिकूट नामक स्थान बसाने का उल्लेख किया है। तभी से उसके वंशज इसी स्थान में रहते चले आ रहे हैं। ब्राह्मणों की बस्ती होने के कारण बाण ने इसका दूसरा नाम ब्राह्मणाधिवास भी कहा है। यही बाण का जन्म स्थान है और यह बिहार में है।

जहाँ तक बाण के काल का सम्बन्ध है, सौभाग्यवश हर्षचरित के आधार पर उसके निर्धारण करने में हमारे आगे कोई कठिनाई नहीं आती। बाण के चरित-नायक हर्ष भारत-सम्राट् हर्षवर्धन ही हैं जो एक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। ह्वेन सांग नामक चीनी यात्री 628 से 645 (ई॰) तक भारत की यात्राओं में रहा। उसने संस्मरण लिखे हैं, जिनमें उसने उत्तर भारत के सम्राट् हर्षवर्धन के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण दिया हैं और जो बाण द्वारा दिए हर्ष-चरित के विवरणों से अच्छी तरह मेल खाते हैं । थोड़ा-बहुत जो अंतर है, वह नगण्य है। इतिहास के अनुसार सम्राट् हर्षवर्धन का शासन-काल 606 से 648 (ई॰) तक रहा। इसलिये यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि बाण का स्थिति काल छठी शती का अन्त और सातवीं शती का पूर्वार्द्ध है।

इसके अतिरिक्त बाण के स्थितिकाल के सम्बन्ध में कितने ही बाह्य साक्ष्य भी दिये जा सकते है। भोज (1025ई॰) ने अपने सरस्वती कण्ठाभरण ग्रन्थ के कुछ स्थलों में बाण का उल्लेख किया है। एक स्थान में उसने बाण की यह आलोचना भी कर डाली है- **'यादृग् गद्य-विधौ बाण: पद्य-बन्धे न तादृश:।'** भोज से पूर्वतन राजा मुञ्ज (भोज के चाचा) के सभापण्डित धनञ्जय ने (1000ई॰) अपने दशरूपक में 'यथा हि महाश्वेतावर्णनावसरे भट्टबाणस्य' लिखकर बाण को स्मरण किया है। ध्वन्यालोक ग्रन्थ के रचयिता आनन्दवर्धनाचार्य (900ई॰) के तो अपने ग्रन्थ में कितने ही स्थानों में बाण की कादम्बरी तथा हर्षचरित के उद्धरण एवं निदर्शन दे रखे हैं। वामनाचार्य (750 से 800ई॰) को भी बाण की कादम्बरी का ज्ञान था। तभी तो उन्होंने अपनी अलंकारसूत्रवृत्ति में बाण के कुछ शब्द उद्धृत किये हैं। उदाहरणार्थ जैसे- **'अनुकरोति भगवतो नारायणस्य इत्यक्रपि मन्ये स्मशब्द: कविता प्रयुक्ता लेखकैस्तु प्रमादान्न लिखित:'** इति।

इस तरह बारहवीं शती से लेकर नीचे सातवीं शती (ई॰) तक उक्त साहित्यकार बाण और उनकी कृतियों से सुतरां परिचित थे। दूसरी तरफ बाण भी हर्षचरित में अपने पूर्ववर्ती कलाकारों-व्यास, भास, कालिदास:, शातवाहन, भट्टार हरिचन्द्र और आढ्यराज-की तथा बृहत्कथा, वासवदत्ता और प्रवरसेन के सेतु काव्य कृतियों की प्रशंसा दिये हुए हैं, जिनकी काल-सीमा छठी शती तक समाप्त हो जाती है। इससे स्वत: सिद्ध हो जाता है कि बाण का स्थितिकाल इन दोनों सीमाओं का मध्यवर्ती काल अर्थात् सातवीं शती का पूर्वार्ध है।

बाण एक सम्पन्न और विद्यावान् ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए। इनकी माता का नाम राज देवी और पिता का नाम चित्रभानु था। भृगु इनके गुरु थे जिन्होंने बड़े-बड़े राजगृहों में प्रतिष्ठा पा रखी थी। दुर्भाग्यवश बाण की माता उन्हें छोटी अवस्था में ही छोड़कर परलोक सिधार गई। इनके पिता ने ही इन्हें पाला-पोसा और पढ़ाया-लिखाया। बाण जब चौदह वर्ष के हुये, तो इनके सिर पर से पिता की छत्र छाया भी उठ गई और अभागा बालक बिल्कुल अनाथ हो गया। बेचारे के हृदय का पारावार न रहा। शोक शान्त होने पर बाण को अपने भविष्य की चिन्ता हुई। शैशव स्वभावत: चपल हुआ ही करता है। और जब यौवन भी जीवन की देहली पर से झाँकता हो तो मन में नयी-नयी उमंगें, नयी-नयी आकांक्षायें और नयी चञ्चलतायें उठा ही करती हैं। यही हाल बाण का भी हुआ। विद्या तो उन्हें घुट्टी के रस में मिली हुई थी। पिता के संरक्षण में शिक्षा भी अपने गुरु से पर्याप्त पा ली थीं। प्रखर प्रतिभा एवं वाक्पटुता का पैतृक दाय साथ लेकर बाण अपने कुछ मित्रों को फोड़ उन्हें साथ लेते हुए देश-भ्रमण हेतु निकल पड़े। कभी इस नगर अथवा जनपद में गए, तो कभी उस नगर अथवा जनपद में गए; कभी वन के स्थित आश्रमों को देखा, तो कभी राजदरबारों की सैर की, कहीं शास्त्रों के प्रवचन सुने, तो कहीं शास्त्रार्थ देखे। कभी कहीं पुराण बाँचा तो कहीं नाटक खेला-अभिप्राय यह कि अपनी इन भ्रमण-यात्राओं में बाण ने सभी कुछ किया। यही कारण है कि लोगों में ये बदनाम हो गये और वे इन्हें भुजङ्ग (लोफर) कहने लगे यद्यपि वास्तव में ये वैसे नहीं थे। अपने इन भ्रमणों में इन्हें संसार और समाज के विविध पहलुओं का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। उससे इनके भीतर छिपा बैठा कलाकार खूब परिपुष्ट और समृद्ध हुआ।

कुछ वर्ष बाद बाण यात्रा समाप्त करके अपने घर प्रीतिकूट वापस आ गए और आनन्द पूर्वक रहने लगे। स्वभाव में अब कुछ गंभीरता और सूझ-बूझ आ गई थी। ग्रीष्म समय की बात है कि एक दिन हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्णवर्धन ने अपना मखलक नामक एक सन्देशवाहक इनके पास भेजकर पत्र द्वारा इन्हें समझाया-'मैं तुम्हारे गुणों और विद्वत्ता पर प्रसन्न हूँ, किन्तु कुछ दुष्ट लोगों ने तुम्हारे विरूद्ध सम्राट् के कान भर रखे हैं। मैंने उन्हें समझा दिया है कि ऐसी बात नहीं है। यौवनावस्था हरेक की उच्छृंखल और चपल हुआ ही करती है। सम्राट् मेरी बात मान गए हैं कि ठीक है। इसलिये किसी बात की शंका और संकोच न करके तुम शीघ्र ही राज दरबार में चले जाओ। तुम जैसे गुणी और विद्वान् का घर में ही बैठा रहना ठीक नहीं लगता।'

ऐसा सोच-विचार कर बाण ने सम्राट् के पास जाने का निश्चय कर लिया और एक शुभ मुहूर्त पर शिव की अर्चना-स्तुति करके ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देकर और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके सम्राट् को मिलने चल पड़े। रास्ते में दो पड़ाव पार करने के बाद तीसरे दिन से अजिरवती नदी के तट पर मणिपुर ग्राम के निकट स्थित राजकीय शिविर में पहुँच गए मुख्य दौवारिक इन्हें राजभवन ले गया। 'स्वस्ति' पूर्वक इन्होंने अभिवादन किया तो सम्राट् ने प्रारंभ में इन्हें 'भुजङ्ग' शब्द से सम्बोधित कर इन पर व्यंग्य कसा, लेकिन ये नहीं घबराए। प्रतिवाद करते हुए बोले-देव, सच्चाई को जाने बिना ही आपने मुझे भुजंग कह डाला है। लोगों का क्या विश्वास? वे तो ऐसी ही बातें उड़ा देते हैं! मैं पुनीत ब्राह्मण कुल में जन्मा हूँ। विधिवत् मेरे संस्कार हो रहे हैं। सभी शास्त्र मैंने पढ़ रखे हैं। गृहस्थाश्रम में भी प्रविष्ट हो गया हूँ। मेरी कौन सी भुजंगता आपने देखी है? शैशव में कुछ चंचलतायें तो स्वभावत: सभी में हो जाया करती है, जिनका मुझे पश्चात्ताप हो रहा है। 'सम्राट्' हमने ऐसा ही लोगों से सुना है' यह उत्तर देकर चुप हो गए। किन्तु बाण से वे बड़े प्रभावित हो गए और प्रसन्न होकर बाद में इन्हें बहुत-सा धन और मान देकर हमेशा के लिए अपना कृपा-पात्र बना लिया।

सम्राट् से आदर मान प्राप्त करके जब बाण शरद में अपने घर प्रीतिकूट लौटकर आए तो उन्हें भाई बन्धु इनके राज-सम्मान से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने इन्हें घेर लिया और उत्सुकता-पूर्वक वे अनुरोध करने लगे कि हमें हर्ष का चरित सुनाइए कि वे कैसे हैं? बाण ने उत्तर दिया-**'भाइयों! सौ जन्म भी क्यों न धरूँ विशाल हर्ष-चरित का पूरा-पूरा वर्णन मेरी तुच्छ बुद्धि नहीं कर पाएगी। हाँ, यदि उसका थोड़ा-सा अंश सुनना चाहो तो उसके लिए मैं तैयार हूँ।'** भाई मान गए कि थोड़ा सा ही सही। दूसरे दिन बाण भाईयों को हर्ष-चरित सुनाने लगे और हर्ष द्वारा विन्ध्याटवी में राज्यमंत्री को पुनः प्राप्त करने तक का वर्णन सुनाकर चुप हो गए। यहीं तक हर्षचरित है और बाण-चरित भी है। दोनों का आगे क्या हुआ कुछ पता नहीं।

हम देख आए हैं कि बाण ने हर्ष के आगे अपने को गृहस्थाश्रम प्रविष्ट हुआ बताया है। परन्तु उनकी पत्नी कौन थी, उसका क्या नाम था-इस सम्बन्ध में बाण कोई संकेत नहीं दे गए। राजशेखर के अनुसार हर्ष के सभी पण्डितों में बाण के साथ-साथ मयूर और मातंग दिवाकर भी थे। किंवदन्ती है कि मयूर बाण का श्वसुर था। उनकी पुत्री ही बाण की पत्नी थी एक समय क्या हुआ कि बाण की पत्नी किसी कारण वश प्रणय-कोप किये बैठी थी। सारी रात बीत गई। बाण मनाते-मनाते थक गए, पर मानिनी क्यों मानती? मनाने के इसी प्रसंग में बाण ने श्लोक के तीन पद इस तरह रच डाले-

गतप्राया रात्रिः कृशतनु ! शशी शीर्यत इव।

प्रदीपोऽयं निद्रावशमुपगतो घूर्णत इव।।

प्रणामान्तो मानस्त्यजसि न तथापि क्रूद्धमहो ![3]

जब बाण चौथा पाद भी बनाना सोच ही रहे थे, तो इतने में तड़के सुबह सहसा मयूर अपनी नव-निर्मित कुछ कवितायें दामाद को दिखाने और सुनाने आ पड़े। बाहर से मयूर ने दामाद के उक्त तीन पाद सुन लिए थे। कवि हृदय ठहरा अवसर क्यों चूकता? झट चौथा पाद स्वयं जोड़कर श्लोक इस तरह पूरा कर दिया-

कुचप्रत्यासत्त्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम्।[4]

कवि होने के नाते बाण तो पादपूर्ति से बड़े प्रसन्न हुए, किन्तु पत्नी का हृदय खौल गया। पुत्री का शृंगार वर्णन करने के पिता के जघन्य अपराध को वह सह न सकी। तत्क्षण शाप दे बैठी-'जा कोढी हो जा। कहते हैं कि मयूर कोढ़ी हो गया। उसने कोढ़-रोग के निवारण हेतु सूर्य भगवान् की उपासना की और उनकी स्तुति में **'सूर्य-शतक'** अथवा **'मयूर-शतक'** लिखा, सूर्य की कृपा से वह रोग से मुक्ति पा गया। इस घटना का उल्लेख मम्मट के 'काव्य प्रकाश' में इस प्रकार है- **'आदित्यादेर्मयूरादीनामिवानर्थनिवारणम्'।**[4] कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि मयूर बाण का श्वसुर नहीं साला था।

बाण ने अपनी सन्तान के सम्बन्ध में भी कुछ नहीं कहा है। किन्तु उनका पुत्र था-इसके कितने ही प्रमाण मिलते हैं। डॉ. ब्यूलरप ने उनके पुत्र का नाम भूषणभट्ट कहा है, परन्तु नवीन शोधों के अनुसार उसका असली नाम पुलिंदभट्ट या पुलिनभट्ट सिद्ध होता है । धनपाल ने (1000ई॰) अपनी तिलकमञ्जरी में पिता और पुत्र-दोनों की प्रशंसा यों कर रखी है-

'केवलोऽपि स्फुरन् बाणः करोति विमदान् कवीन्।

किं पुनः क्लृप्त-सन्धानः पुलिन्ध्रकृतसन्निधिः।।[5]

कवि ने श्लेष-निर्वाह हेतु यहाँ पुलिन्द के स्थान में पुलिन्ध्र किया। वैसे यह सर्वविदित ही है कि कादम्बरी अधूरी रचना है। कवि पूर्वार्ध ही लिख पाया था कि मृत्यु ने उसे आ दबोचा। उसके पुत्र ने उत्तरार्द्ध लिखकर ग्रन्थ को पूरा किया है जैसे कि उत्तरार्द्ध के आरम्भिक श्लोकों में उसने स्वीकार किय है-

"याते दिवं पितरि तद्वचसैव सन्धि-

विच्छेदमाप भुवि यस्तु कथाप्रबन्धः ।

दु:खं सतां तदसमाधिकृतं विलोक्य

मया न कवित्वदर्पात्।।[6]

पुलिन्द के अतिरिक्त भी बाण के पुत्र थे-इसका पता नहीं चला है, किन्तु संस्कृत-जगत् में यह प्रवाद चला हुआ है कि उनके एक से अधिक पुत्र थे। सुनते हैं कि जब मृत्यु का क्रूर हाथ अपनी ओर बढ़ता हुआ बाण को दिखाई देने लगा तो अपनी कादम्बरी अधूरी देखकर उन्हें बड़ा दु:ख हो रहा था। शान्ति से प्राण नहीं निकल रहे थे। पुत्र पिता की अन्तर्व्यथा को भाँप गए। आश्वासन दिलाया कि उनकी कृति अधूरी नहीं रहने दी जाएगी, लेकिन मुमूर्षु को विश्वास नहीं आ रहा था। उन्होंने एतदर्थ पुत्रों की योग्यता देखनी चाही। घर के आंगन में एक सूखा वृक्ष खड़ा था। पिता ने बड़े पुत्र से उसका वर्णन करने को कहा तो वह झट वर्णन कर बैठा-**'शुष्को वृक्षस्तिष्ठत्यग्रे।'** शुष्क वृक्ष की तरह पुत्र की भाषा को भी शुष्क देखकर बाण के प्राण भी निराशा में शुष्क होने लगे। इतने में झट छोटा पुत्र भूषणभट्ट वर्णन कर बैठा-**'नीरसतरुरिह विलसति पुरतः'।** सुनते ही मरणासन्न पिता के प्राणों में आशा की सरसता आ गई। उन्होंने इस आशा के साथ कि इसके हाथों मेरी अधूरी कथा अवश्य पूरी हो जाएगी, शान्ति से प्राण त्याग दिए। इस प्रकार बाणभट्ट का जीवन-परिचय संस्कृत साहित्य में देदीप्यमान नक्षत्र के समान प्रतिष्ठित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हर्षचरित भूमिका , पृ॰-5 ।
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ॰ -110 ।
3. हर्षचरित, पृ॰-81
4. वही।
5. वही।
6. वही।